



रावण से मुलाकात वयंग कथाएं

कल सुबह-सुबह रास्ते में दस सरि वाला हट्टा कट्टा बंदा अचानक मेरी बाइक के आगे आ गया खैर जैसे तैसे ब्रेक लगाई और पूछा ...

क्या अंकल 20-20 आँखें हैं ... फरि भी दखाई नहीं देता

जवाब मलिा : तमीज से बोलो, हम लंकेश्वर रावण हैं

मैने कहा : ओह अच्छा !

तो आप ही हो शरीमान रावण एक बात बताओ ये दस-दस मुंह संभालने थोड़े मुश्कलि नहीं हो जाते ? मेरा मतलब शैम्पू वगैरह करते टाइम ... यू नो ... और कभी सर दर्द शुरू हो जाए तो पता करना मुश्कलि हो जाता होगा किकौनसे सर में दर्द हो रहा है...?

रावण : पहले ये बताओ तुम लोग कैसे डील करते हो इतने सारे मुखोटों से ? हर रोज चेहरे पे एक नया मुखोटा उस पर एक और मुखोटा, उस पर एक और ! यार एक ही मुंह पर इतने नकाब ... थक नहीं जाते ?

मैने झंपते हुए कहा : अरे-अरे आप तो सरियिस ले गए ... मै तो वैसे ही ... अच्छा ये बताओ मैने सुना है आप कुछ ज्यादा ही अहंकारी हो?

रावण- हाहाहाहाहाहाहा

अब इसमे हंसने वाली क्या बात थी , कोई जोक मारा क्या मैने ?

रावण- और नहीं तो क्या...एक कलयुगी इन्सान के मुंह से ये शब्द सुनकर हंसी नहीं आएगी तो और क्या होगा ?

तुम लोग साले एक छोटी मोटी डगिरी क्या ले लो, अँग्रेजी के दो-पवरी अक्षर क्या सीख लो, यू इतरा के चलते हो जैसे तुमसे बड़ा ज्ञानी कोई है ही नहीं इस धरती पर ... एक तुम ही समझदार बाकी सब गँवार ! और मैने चारों वेद पढ के उनपे टीका टपिपणी तक कर दी ! चंद्रमा की रोशनी से खाना पकवा लिया ! इतने-इतने क्लोन बना डाले, दुनिया का पहला वमिन और खरे सोने की लंका बना दी ! तो थोड़ा बहुत घमंड कर भी लिया तो कौन आफत आ पड़ी... हैं?

मै थोड़ा सा और सकुचाते हुए : चलो ठीक है बॉस,ये तो जस्टफिाई कर दिया आपने, लेकिन ... लेकिन गुस्सा आने पर बदला चुकाने को कसिी की बीवी ही उठा के ले गए ! ससुरा मजाक है का ? बीवी न हुई छोटी मोटी साइकल हो गयी...दलि कयिा, उठा ले गए बताओ !

(एक पल के लिए रावण महाशय तनकि सोच में पड़ गए, मेरे चेहरे पर एक वजियी मुस्कान आने ही वाली थी कफिरि वही इरटिगि अट्टहास)

हाहाहाहाहहह लुक हू इज सेइंग ! अबे मैने श्री राम की बीवी को उठाया, मानता हूँ बहुत बड़ा पाप कयिा और उसका परणाम भी भुगता ,पर मेघनाथ की कसम-कभी जबरदस्ती दूर...हाथ तक नहीं लगाया,उनकी गरमिा को रत्ती भर भी ठेस नहीं पहुँचाई और तुम ...

तुम कलयुगी इन्सान !! छोटी-2 बच्चियों तक को नहीं बखशते ! अपनी हवस के लिए कसिी भी लडकी को शकिार बना लेते हो...कभी जबरदस्ती तो कभी झूठे वादों,छलावों से ! अरे तुम दरदों के पास कोई नैतिक अधिकार बचा भी है भी मेरे चरतिर पर उंगली उठाने का ?? फोकट मैं ही !

इस बार शर्म से सर झुकाने की बारी मेरी थी...पर मै भी ठहरा पक्का इन्सान ! मजाक उड़ाते हुए बोला...अरे जाओ-जाओ अंकल ! दशहरा कल ही है, सारी हेकड़ी नकिल देंगे देखना

(और इस बार लंकवेशवर जी इतनी जोर से हँसे कभै गरिते-गरिते बचा !)

यार तुम तो नवजोत सहि सदिधू के भी बाप हो ,बनिा बात इतनी जोर-2 से काहे हँसते हो...ऊपर से एक भी नहीं दस-दस मुंह लेके, कान का परदा फाड़ दो, जरा और जोर से हंसो तो !

रावण- यार तुम बात ही ऐसी करते हो । वैसे कमाल है तुम इन्सानो की भी..वजिज्ञान में तो बहुत तरक्की कर ली पर कॉमन सैन्स ढेले का भी नहीं ! हर साल मेरा पुतला भर जला के खुश हो जाते हो ...घुटन मुझे होती है तुम लोगों का लैवल देख कर...मतलब जानते नहीं दशहरा का ,बदनाम मुझे हर साल फालतू में करते हो कसिी दनि टाइम नकिल कर तुम सब अपने अंदर के रावण को देख सको तो

पता चले की क्या तुम मुझे जलाने लायक हो ??

जलाना छोड़ो ! तुम आज के तुच्छ इन्सान मेरे पैर छूने लायकभी नहीं..

बाकी दलि बहलाने को कुछ भी करो

और उसके बाद मेरी हम्मत जवाब दे गयी और मै पतली गली से नकिल लिया ...